रिकॉर्डः– लाख जमाने वाले..... ओम प्रातः क्लास 24/10/1966

ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत सुना। बच्चे कहते हैं कि कोई भी हमको संशयबुद्धि बनाने लिए कुछ भी करे हम कभी संशयबुद्धि नहीं बनेंगे। कोई भी उल्टी–सुल्टी बात बतावेंगे तो हम कब संशयबुद्धि नहीं बनेंगे। एक श्रीमत पर ही चलेंगे। बाप तो रोज़–2 बच्चों को भिन्न–2 प्वाइंट्स समझाते रहते हैं। बच्चों को समझाया था कि चित्र त्रिमूर्ति–गोले के चित्र जिनके पास हैं उनके लिख देना है कि कलियुग अंत में 600 करोड़ और सतयुग आदि में 9 लाख। हरेक चित्र में यह लिख देना चाहिए। तो मनुष्य समझ जाए बरोबर विनाश तो होना ही है। बड़ा भारी विनाश होना है। महाभारत लड़ाई जो 5000 वर्ष पहले भी हुई थी वो फिर ज़रूर होनी है। तो चित्रों पर मनुष्य अच्छी रीति से समझ सकेंगे। नई दुनिया सतयुग में थी ही 9 लाख। तो ज़रूर अभी इतने जो मनुष्य ढेर हैं वो सब विनाश होंगे। बुद्धिवान मनुष्य जो होंगे वो थोड़े इशारे से ही समझ सकेंगे। बरोबर इस महाभारत महाभारी लड़ाई से अनेक धर्म विनाश हो एक देवी–देवता धर्म की स्थापना होगी। जो लायक बनेंगे वो ही मनुष्य से देवता होंगे। बाप बिगर तो कोई मनुष्य से देवता बना ना सके। तो बच्चों की बुद्धि में यह याद रहना चाहिए अब हमको घर जाना है; परन्तु माया घड़ी–2 भुला देती है। यहाँ से घर जाने से ही नशा उड़ जाता है। अब बच्चे जानते हैं विनाश तो सामने खड़ा है। इसलिए अब बाप को याद कर सतोप्रधान बनना है। कोई भी समय लड़ाई बड़ी हो जाए नियम थोड़े ही है। कहते भी हैं शायद बड़ी लड़ाई हो जाए जो बंद ना हो सके। सब एक/दो में लड़ने लग पड़ेंगे। तो विनाश से पहले क्यों ना हम याद में रह तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करे। याद की यात्रा में ही माया बड़े विघ्न डालती है। इसलिए बाबा रोज़ कहते हैं अपना चार्ट लिखो। मुश्किल कोई 2–4 लिखते हैं। बाकी तो अपने धंधे–धोरी आदि में ही सारा दिन पड़े रहते हैं। अनेक प्रकार के विघ्नों में पड़े रहते हैं। बच्चों को मालूम पड़ा है हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है तो कहाँ भी रहते पुरुषार्थ में तत्पर रहना चाहिए। हरेक को गृहस्थ व्यवहार, धंधे आदि में रहते अपना पुरुषार्थ करना है। मनुष्यों को समझाने लिए भी चित्र आदि बनवाते रहते हैं; (क्योंकि) मनुष्य हैं 100% तमोप्रधान। अब सतोप्रधान बनना है। पहले जब मुक्तिधाम से आते हैं तो सतोप्रधान होते हैं। फिर सतो से रजो–तमो में आते हैं। इस समय सब तमोप्रधान हैं। तो सब मनुष्य मात्र को अपन को सतोप्रधान बनाना है। सब धर्म वालों को यह पैगाम देना है कि बाप को याद करने से तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। विनाश भी बरोबर सामने खड़ा है। सतयुग में एक ही धर्म था। बाकी सब निर्वाणधाम में थे। तो बच्चों को चित्रों पर भी बड़ा अटेंशन देना चाहिए। सीढ़ी बैंगलोर से बनकर आई है यह तो छोटी है। बड़ा चित्र होने से बहुत मनुष्य अच्छी तरह से देख सकेंगे। छोटे चित्र पर तो एक ही समझ सकेंगे। सबको बाप का पैगाम देना है। मनमनाभव का अक्षर ही मुख्य है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। अल्फ और बे। इस समझाने में भी मेहनत कितनी करनी पड़ती है। समझाने वाले भी नम्बरवार हैं। बेहद के बाप साथ लव भी बहुत होना चाहिए। बुद्धि में यह रहना चाहिए हम बाबा की सर्विस कर रहे हैं। खुदाई खिदमतगार बनना है। वो लोग अक्षर भल कहते हैं; परन्तु अर्थ नहीं समझते। अब बाप आए हैं बच्चों की खिदमत करने। कितना उत्तम देवता बनाते हैं। यह बुद्धि में रहना चाहिए, आज हम कितने कंगाल हैं। मेहतर कहो, बन्दर मिसल कहो, कंगाल कहो, जो कुछ नाम दो। ऐसे बन पड़े हैं। सतयुग में सर्वगुण.... थे। यहाँ तो क्या लगा पड़ा है। सब एक/दो में लड़ते–झगड़ते रहते हैं। यह किसको पता नहीं है कि विनाश होना है। समझते हैं शान्ति हो जावेगी। बिल्कुल ही घोर–अंधियारे में पड़े हैं। अब उनको समझाने वाला चाहिए। विलायत में भी यह नॉलेज तुम दे सकते हो। जैसे माथर देहली से विलायत गया है। उनके पास प्रोजेक्टर ...लाइड्स आदि हैं। सर्विस क्या करते हैं सो पता नहीं है। एक ही बात वहाँ संगठन में सुनावे कि अब कलियुग 600 करोड़। न्यू डीटी वर्ल्ड सतयुग में मनुष्य बहुत थोड़े होते हैं 9 लाख। अब इस पुरानी दुनिया का विनाश तो ज़रूर होगा। यह महाभारत लड़ाई तो नामीग्रामी है। गॉड फादर भी यहाँ है ज़रूर। वो ही ब्रह्मा द्वारा स्थापना

कर रहे हैं स्वर्ग की। शंकर द्वारा विनाश भी होना है कलियुग का; क्योंकि अब है संगम। यह तो समझते हो कैसे नैचरल कैलेमिटीज़ आदि होती है। वर्ल्ड वार दी लास्ट वार कहते हैं। यह है बड़े ते बड़ी लड़ाई। फाइनल विनाश तो ज़रूर होना ही है। तो सबको यह कहना पड़े बेहद के बाप को याद करो तो मुक्तिधाम में चले जावेंगे। देह सहित देह के संबंध छोड़ अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। भल अपने धर्म में रहें तो भी सिर्फ बाप को याद करने से अपने धर्म में अच्छा पद पा सकते हैं। भारत का प्राचीन राजयोग तुम बच्चे ही जानते हो। बाकी साधु–संत आदि तो सब ठगते रहते हैं। अब तुम जानते हो बेहद का बाप हमको प्रजापिता ब्रह्मा के तन में यह नॉलेज दे रहे हैं। तो फिर औरों को समझाना पड़े ना। चैरिटी बिगन्स एट होम। आसपास सबको संदेश देना है। फिर और धर्म वालों को भी बाप का परिचय देना है। बाहर (विलायत) वालों को, राजाओं आदि को नॉलेज तो देना है ना। इसके लिए तैयारी करनी चाहिए। बाप कहते हैं यह मुख्य चित्र जो हैं त्रिमूर्ति, गोला और झाड़। यह कपड़े पर छप जाए तो कहाँ बाहर ले जा सकते हैं। बड़ा साइज़ नहीं (छप) सकता तो अच्छा दो टुकड़े कर सकते हैं। सारा ज्ञान इन त्रिमूर्ति, गोला और झाड़ में है। सीढ़ी का भी ज्ञान गोले में आ जाता है। सीढ़ी फिर डिटेल में बनाई है कि 84 जन्म कैसे लिए जाते हैं। इस चक्कर में सब धर्म वालों का आ जाता है। वो सीढ़ी दिखलाते हैं कैसे नीचे उतरते हैं। सतोप्रधान फिर सतो–रजो–तमो में आते हैं। अब बाप कहते हैं माम् एकम् याद करो। सीढ़ी भी अच्छी है। बाबा का सारा दिन ख्याल चलता है कोई बड़ा नया मकान बनावे तो इसमें दीवार इतनी हो जो उस पर 6×9 साइज़ के चित्र बनाए जाए। दीवार 12 फुट की चाहिए। झाड़, गोला सब लगाना पड़े। भाषाएँ भी बहुत हैं ना। बाबा को सर्विस का ही ख्याल रहता है। सब धर्म वालों (को) समझाना है। कितनी भाषाएँ बनानी पड़े। इतनी विशाल बुद्धि से युक्ति रचनी चाहिए। सर्विस का बहुत ख्याल रखना चाहिए। सर्विस का शौक होना चाहिए। तुम इन चित्रों आदि से आमदनी भी कर सकते हो। खर्चा तो करना ही है; परन्तु तुमको भीख माँगने की दरकार नहीं है। तो यह जो मुख्य 3–4 चित्र हैं वो क्यों ना कपड़े पर छप जाए तो टूटने–फूटने का भी ना रहेगा। यह चीज़ बाहर वाले देखेंगे तो बहुत ऐसे निकलेंगे जो खुद बनावेंगे। जो इस ज्ञान से वाकिफ है, बना सकते हैं। कोशिश करनी चाहिए कपड़े पर छप जाएँ। बाप कहते हैं सिर्फ बनाने वाला चाहिए। खर्चा की बात नहीं। वो तो आपे ही हुण्डी भर जावेगी। ड्रामा में नूँध है। बच्चों की बुद्धि चलनी चाहिए कपड़े पर कैसे छपवावें। बच्चे थोड़ा ही कुछ करते हैं तो नशा बहुत रहता है, हम बहुत होशियार हैं। बाबा कहते हैं रुपये से अजन 4 आना भी नहीं सीखे हैं। जिसको महारथी कहते हैं वो मुश्किल से 4 आना सीखे हैं। बाकी तो कोई दो आना, कोई एक आना, कोई एक पैसा जितना भी मुश्किल सीखे हैं। कुछ भी समझते नहीं। मुरली पढ़ने का शौक नहीं। साहुकार प्रजा, गरीब प्रजा, सब यहाँ ही बननी है। कोई तो बाप से अंजाम कर फिर काला मुँह कर देते। शर्म नहीं आता। कहते हैं– बाबा, हार खा ली। बाप कहते हैं नैहलत है। तुम तो प्यादे से भी प्यादे हो गए। वर्थ नॉट पैनी (तो) क्या पद पावेंगे! कहाँ ऊँच पद राजाई का पाना, कहाँ प्रजा में भी चण्डाल, मेहतर आदि जाए बनना। यह सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। जिनको बाप की याद रहती है वो खुशी में रहते हैं। तुम सब कहते हो बापदादा। डाडे का वर्सा बाप द्वारा मिलता है। बाप से हम वर्सा लेते हैं। यह भी सिर्फ याद रहे तो भी फायदा है। धारणा कर फिर औरों को आप समान बनाना है। बच्चों से सर्विस पहुँचती नहीं है। थोड़ी सर्विस किया तो समझते हम पास हो गए। माथा फिर जाता। देह–अभिमान आने से ही गिर पड़ते। बाबा की बेअदबी हुई तो शिवबाबा समझते हैं, जिस द्वारा हम ज्ञान सुनाते हैं उनकी बेअदबी की गोया हमारी की। बापदादा दोनों इकट्ठे हैं ना। ऐसे थोड़े ही बस हम तो शिवबाबा को ही याद करते हैं। उनसे ही कनेक्शन है। अरे, वर्सा तो तुमको इन द्वारा मिलेगा ना। इनको दिल का समाचार सुनाना है। राय लेनी है। शिवबाबा भी कह देते हैं, हम साकार द्वारा राय देंगे। ब्रह्मा बिगर डायरैक्ट शिवबाबा से रास्ता

फिर धूर मिलेगा। ऐसे बहुत हैं जो कहते हैं हमारा तो शिवबाबा से कनेक्शन है; परन्तु ब्रह्मा का बच्चा बनने बिगर शिवबाबा से वर्सा कैसे लेंगे। बाप बिगर कुछ काम ना हो सके। इसलिए बच्चों को बहुत संभाल करनी चाहिए। उल्टा अहंकार में आए अपनी बरबादी कर देते हैं। साकार की दिल से उतरे तो निराकार की दिल से भी उतर जावेंगे। ऐसे बहुत मूर्ख हैं। कब मुरली नहीं सुनते, कब पत्र नहीं लिखते। तो बाप क्या समझेंगे। मज़िल बड़ी भारी है। बच्चों को टाइम वेस्ट ना करना चाहिए। बाबा को चित्रों की बहुत जरूरत है। इसमें भी अटेंशन देना चाहिए। बाबा को कितना ओना रहता है। चित्र बनाने वालों को अच्छे–2 कारीगरी हाथ करने चाहिए, जो बड़े चित्र बनावे। अनेक प्रकार की पेंटिंग होती है। एक बड़ी सर्विसएबुल पार्टी होनी चाहिए, जो वह चित्र बनवाए। कपड़े पर चित्र होंगे तो बाहर ले जाना सहज होगा। बाहर में तो बड़ी–2 मशीनरी होती है। वहाँ तो अच्छी रीति चित्र बन सकते हैं। तो जो अपन को महारथी समझते हैं उन्हों को ऊँच ते ऊँच काम में मदद करनी चाहिए। तो बाबा भी खुश हो आफरीन देवे। इनसे बहुतों का कल्याण होगा। सारा दिन सर्विस में रहेंगे। प्रदर्शनी में तो ढेर आते हैं। इसमें भी प्रजा बनती है। सर्विसएबुल बच्चे आँख में रहेंगे। इस इन्द्रसभा में आने चाहिए राजा–रानी बनने वाले। जो सर्विस ही नहीं करते वो लायक ही नहीं। आगे चल सब पता पड़ेगा– कौन–2 क्या–2 बनेंगे। बच्चों को बहुत नशा रहना चाहिए हम कल स्वर्ग में जाए राजकुमार बनेंगे। यहाँ तुम आते ही हो राजयोग सीखने। अच्छे रीति ना पढ़ेंगे तो पद भी कम पावेंगे। बाप के पास तो बच्चों का समाचार आना चाहिए ना। बाबा आज यह सर्विस की। पत्र ही कब ना लिखेंगे तो समझेंगे मर गया। बाबा को याद भी वो रहते हैं जो सर्विस में रहते हैं। बाप का परिचय देना है। शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्रह्माकुमार–कुमारियों को वर्सा देते हैं। ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा ब्राह्मण कुल की रचना रचते हैं। गीता में झूठा नाम डाल खण्डन कर दिया है। साधु–सन्यासी (आदि) जो भी शास्त्र आदि सुनाते हैं सब झूठ। ..... सन्यासियों को तो शास्त्र आदि सुनाने, भक्ति करने का हक नहीं है। सन्यासियों को तीर्थयात्रा पर रहने का हक नहीं है। वो है ही प्रवृत्तिमार्ग वालों लिए। उनको तो जंगल में रहना है। वो है तत्व ज्ञानी, ब्रह्म ज्ञानी। समझते हैं ज्योति में समा जावेंगे। वो ऐसे थोड़े ही कहेंगे राजा–रानी बनना है। तो वो प्रवृत्तिमार्ग वालों के गुरु बन नहीं सकते। कितनी ठगी है। अब किसको समझावे! गवर्मेन्ट तो है इररिलीजस। धर्म–कर्म भ्रष्ट हो पड़ी है। और सब धर्म हैं। आदि सनातन देवी–देवता धर्म का फाउंडेशन गुम है। यह सारा खेल बना हुआ है। सीढ़ी में सब धर्म हैं नहीं। तो फिर गोले पर समझाना पड़े। गोले में क्लीयर है। यह भी तुम समझा सकते हो सतयुग में देवी–देवताएँ डबल सिरताज थे। इस समय पवित्रता का ताज कोई को है नहीं। एक भी नहीं जिसको हम लाइट का ताज देवे। अपन को भी नहीं दे सकते। हम लाइट के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। शरीर तो यहाँ प्युअर नहीं है। आत्मा भी योगबल से प्युअर होते–2 अन्त में प्युअर हो जावेगी। ताज तो मिलेगा सतयुग में। सतयुग में हैं डबल सिरताज। यहाँ कोई ताज नहीं। भक्तिमार्ग में सिंगल ताज। अब सिर्फ प्युरिटी का ताज कहाँ दिखावे? यह भी दिखाना पड़े ना! लाइट कहाँ रखे? ज्ञानी तो बने हैं; परन्तु कम्प्लीट प्युअर जब बनते हैं तो लाइट होनी चाहिए। तो सूक्ष्मवतन में लाइट दिखावे। जैसे मम्मा सूक्ष्मवतन में प्युअर फरिश्ता है ना। सिंगल ताज है। सतयुग में डबल सिरताज होगा। सूक्ष्मवतन में कहाँ, किसको दिखावे? लाइट दिखानी तो चाहिए ना! सूक्ष्मवतन में कहाँ किसको दिखावे? प्युअर होती ही है पिछाड़ी में। योग में जहाँ बैठे हैं लाइट दिखावे; परन्तु आज लाइट देवे, कल फिर पतित बन जाते तो लाइट गुम हो जाती है। इसलिए पिछाड़ी में जब कर्मातीत अवस्था को पावेंगे तब प्युरिटी का ताज हो सकता है। तो अब हम लाइट कैसे दिखावे? सूक्ष्मवतन का तो सा० होता है। दुनिया को कैसे समझावे? अब लाइट आ रही है। यहाँ तो लाइट दिखा नहीं सकते। सम्पूर्ण प्युअर बनने से हम (चले) जाते हैं सूक्ष्मवतन में। जैसे बुद्ध को लाइट दिखाते हैं। पहले–2 प्युअर सोल स्थापना करने आती है ना। उनको लाइट दे सकते हैं, ताज नहीं। तो बच्चों को विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। अच्छा, गुडमॉर्निंग। ओम।